भूमिका

सिने कला को अन्य कलाओं की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। यह कला समाज को सीधे तौर पर बहुत ही तेजी से और बहुत ही गहरे तक प्रभावित करता है। हालांकि इस कला का विकास सिर्फ व्यावसायिक उद्देश्य से ही किया गया था। लुमिएर द्वारा बनाई गई दुनिया की जो पहली फिल्म लोगों को बुलाकर दिखाई गई थी, उसकी विषय-वस्तु यही थी कि एक ट्रेन प्लेटफॉर्म पर आकर खड़ी होती है। यह घटना अगर चलचित्र के बजाय यदि स्थिर चित्र में दिखाई जाती तो भी कथ्य को समझने में कठिनाई नहीं होती। लेकिन चलचित्र का प्रभाव स्थिरचित्र की अपेक्षा कई गुना अधिक था। बहुत ही जल्दी ग्रिफिथ ने इस विधा को दूसरे नजरिए से देखते हुए विश्व सिनेमा के इतिहास में कई खास-खास प्रयोग कर कहानी कहने की विशिष्ट शैली बना दी। कभी व्यावसायिक दबाव में तो कभी सामाजिक उद्देश्यों के चलते इस कला का उतरोत्तर विकास होता गया और सिनेमा लोगों के और भी करीब आ गया। अगर सिनेमा के विकास की नींव को मनोरंजन और व्यवसाय के उद्देश्य से रखा गया था, तो बहुत ही जल्दी दुनिया भर के विद्वानों ने इसकी शक्ति की पहचान करते हुए लोगों के मार्गदर्शन के उद्देश्य से इसका प्रयोग सामाजिक आंदोलनों के लिए भी किया।

इस संदर्भ में ब्लामिदीर इल्यीच लेनिन का कथन उल्लेखनीय है-

"हमारे लिए सिनेमा सभी कलाओं से अधिक महत्वपूर्ण है। सिनेमा न केवल लोगों के मनबहलाव का बल्कि सामाजिक शिक्षा, संवाद स्थापित करने तथा हमारी विशाल जनसंख्या को एक सूत्र में बांध लेने का सशक्त साधन है"।

... ब्लामिदीर इल्यीच लेनिन

भारतीय सिनेमा के सौ साल के इतिहास में यदि हम अपनी उपलब्धियों का निरीक्षण करना शुरू करें तो साहित्यिक और तकनीकी दोनों स्तर पर हमें निराशा ही हाथ लगती है। इसका मुख्य कारण एक बने-बनाए दायरे के अंदर रहकर काम करना व व्यावसायिक दबाव है। फिर भी भारतीय सिनेमा के इतिहास में कुछ ऐसे विद्वान ज़रूर हुए हैं जो दोनों स्तरों पर अपने मौलिक कार्यों से भारतीय सिनेमा को संपन्न बनाने का प्रयास किया है।

भारतीय सिनेमा में आज भी कुछ ऐसे फिल्म निर्देशक हैं, जो सीमित दायरे से बाहर निकल कुछ नया करने हेतु प्रयासरत हैं। भारतीय सिनेमा में एक दौर ऐसा भी था जब इसको संपन्न बनाने एवं एक ऊंचाई देने के लिए सत्यजित राय, ऋत्विक घटक जैसे लोग प्रयासरत थे। लेकिन इनके बाद मानों भारतीय सिनेमा दिशाहीन हो किसी और ही दुनिया की ओर बढ़ने लगी। बात अगर बॉलीवुड यानी हिंदी सिनेमा कि करें तो इसकी दशा दिनों-दिन बद से बदतर होने लगी थी।

90 के दशक में तेलगु में अपनी एकमात्र फिल्म बनाकर हिंदी सिनेमा की ओर अपना रूख करने वाला एक युवा निर्देशक *राम गोपाल वर्मा* आता है और हिंदी सिने जगत को सिनेमा का एक नया स्वरूप दिखाता है। अगर 90 के दशक से हिंदी में बन रही फिल्मों को देखा जाए तो राम गोपाल वर्मा की फिल्मों का विशिष्ट स्थान रहा है। इस दौर में जितनी फिल्में बन रही थीं, उनसे इनकी फिल्में कई मायने में भिन्न है। इन्होनें अपनी पहली हिंदी फिल्म शिवा 1990 में बनाई। इस फिल्म को 1989 में राम गोपाल वर्मा ने ही इसी नाम से तेलगु में बनाया था। यह फिल्म व्यावसायिक स्तर पर तो सफल हुई ही, साथ ही यह फिल्म भारत के तमाम फिल्म विद्वानों द्वारा जमकर सराही गई। इस फिल्म से राम गोपाल वर्मा ने हिंदी सिनेमा को कथ्य, शिल्प और तकनीक की एक नई दृष्टि प्रदान।

जिस समय राम गोपाल वर्मा ने फिल्म शिवा का निर्माण किया गया, उस समय हिंदी सिनेमा यथार्थ-जीवन और वास्तविक सौंदर्य से कोसों दूर एक जादुई भ्रमजाल प्रस्तुत करने में व्यस्त था। अर्थात

हिंदी सिनेमा सिर्फ मनोरंजन के उद्देश्य से सिने पटल पर, एक बने बनाए फार्मूले के तहत एक काल्पनिक-रूमानी दुनिया का निर्माण कर रहा था। तब ये राम गोपाल वर्मा ही थे जिन्होनें इस परंपरा को नकारते हुए हमारे ही समाज को हिंदी सिने पटल के द्वारा हमारे बीच प्रस्तुत करने की एक नई परंपरा की शुरुआत किया। अपने आगे की अन्य फिल्मों द्वारा इन्होनें सिनेमा के लगभग सभी महत्वपूर्ण पहलुओं पर जमकर प्रयोग किया और सिनेमा के लगभग सभी महतवपूर्ण तत्वों को एक नए नजरिए से प्रस्तुत किया। इनके फिल्मों में एक नयापन दिखता है, जो बिलकुल अपना सा, हमारे बीच का लगता है। यह नयापन और अपनापन विषय-वस्तु, भाषा और तकनीक तीनों स्तर पर समान रूप से दिखाई देता है। सिनेमैटोग्राफी हो, अभिनय हो, संवाद हो, पार्श्वध्वनि हो, कास्ट्यूम हो या फिल्मों में दिखने वाले स्थल सबकुछ नए स्वरूप और नए तरीके से।

इन सारी विशेषताओं को देखकर मुझे लगा कि इस विषय पर शोध कार्य करना न सिर्फ मेरे लिए बल्कि पूरे सिने जगत के लिए काफी उपयोगी एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। मैं यह नहीं कहता कि इस शोध-प्रबंध द्वारा मैं हिंदी सिनेमा को एक नया सिद्धांत दे रहा हूँ, ना ही ये कि राम गोपाल वर्मा ने हिंदी सिनेमा को वैश्विक पटल पर पहुंचा दिया है या हिंदी सिनेमा के माध्यम से नए-नए सिद्धांत व तकनीक की खोजकर विश्व सिनेमा को संपन्न किया है। लेकिन मैं इस बात को ज़ोर देकर कहूँगा कि राम गोपाल वर्मा ने व्यावसायिकता के दबाव से मुक्त होकर अपनी प्रयोगधर्मी कार्यशैली से फिल्म बनाने वालों को कुछ सार्थक और मौलिक करने के लिए प्रेरित किया।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध द्वारा राम गोपाल वर्मा के कार्यशैली का विश्लेषण कर उसके विभिन्न पहलुओं के विभिन्न कार्य-कारण संबंध एवं प्रभाव को समझने का प्रयास किया गया है। विषय की गंभीरता बनी रहे इसके लिए मैंने इनके द्वारा किए गए सम्पूर्ण कार्यों के एक अंश को अपने शोध कार्य का

आधार बनाया। इसके लिए मैंने इनके द्वारा हिंदी में निर्देशित क्राइम जॉनर की कुछ फिल्मों (शिवा, सत्या, कंपनी,सरकार, सरकार राज, रक्तचरित्र-1, रक्तचरित्र-2) को ही अपने शोध के अंतर्गत लिया है।

अपने शोध कार्य के दौरान सामाग्री संकलन हेतु मैंने तमाम पुस्तकालय, इंटरनेट और बाज़ार में विषय से संबंधित पूर्व में हुए कार्यों से संबधित सामग्री प्राप्त करने का प्रयास किया, पर कहीं भी मुझे राम गोपाल वर्मा के कार्यों से संबंधित कोई सामाग्री नहीं मिली। अत: मैंने सिनेमा से संबंधित कुछ सैद्धांतिक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, आर्टिकल्स और इंटनेट पर उपलब्ध समग्रियों का विश्लेषण कर उसे अपने शोध कार्य का आधार बनाया साथ ही मैंने प्रसिद्ध फिल्म निर्माता बोनी कपूर और वरिष्ठ सिने पत्रकार जय प्रकाश चौकसे जैसे कुछ विद्वानों के साक्षात्कार कर अपने शोध कार्य को एक सार्थक रूप देने का प्रयास किया है।

इस शोध में मुख्य रूप से विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक,गुणात्मक एवं आलोचनात्मक शोध पद्धतियों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध को मैंने 4 अध्यायों में विभाजित किया गया है-

1. व्यक्तित्व और कृतित्व
2. कहानी
3. शैली
4. तकनीक

प्रथम अध्याय में मैंने राम गोपाल वर्मा के व्यक्तिगत जीवन और इनके कार्यों का उल्लेख संक्षेप में किया है ।

दूसरे अध्याय में मैंने राम गोपाल वर्मा के कहानी के स्तर पर कार्य करने के तरीके को समझने का प्रयास किया है। वो किसी घटना को किस नजरिए से देखते हैं, फिल्मों के लिए आइडिया कहाँ से पाते हैं। ये किसी घटना को पर्दे पर किस तरह से दिखते हैं, अर्थात पर्दे पर दिखाई देने वाले फिल्म की काहानी का विकास कैसे करते हैं। जिसके अंतर्गत ये फिल्म की शुरुआत कैसे करते हैं, जब इनकी फिल्म मध्य में होती है तब किस तरह घटनाओं का प्रस्तुतीकरण होता है फिर फिल्म को अंत में कैसे पहुंचाते हैं।

तीसरे अध्याय में मैंने राम गोपाल वर्मा के शैली को समझने का प्रयास किया है। जिसके अंतर्गत संवाद लेखन, संवाद अदायगी, अभिनय, सेटिंग व वेश-भूषा को रखा है। राम गोपाल वर्मा के संवाद लेखन का तरीका क्या है, किस तरह से कितना और क्या लिखते है व उनके अभिनेताओं/अभिनेत्रिओं द्वारा संवाद अदायगी की शैली क्या होती है। इसी तरह इनके अभिनेताओं/अभिनेत्रिओं की अभिनय शैली का विश्लेषण किया गया है। सेटिंग व वेश-भूषा के अंतर्गत सेट डिजाइनिंग व कॉस्टयूम तथा मेकअप का विश्लेषण किया गया है। राम गोपाल वर्मा की यह शैली उनके चरित्रों, मूल कथा, फिल्म के मूलभाव तथा दर्शकों को कैसे और कितना प्रभावित करती हैं, को समझने का प्रयास किया गया है।

चौथे अध्याय के अंतर्गत मैंने तकनीकी पक्ष को लिया है, जिसमें इनके कैमरा स्थापन(ब्लॉकिंग) व गति, प्रकाश तथा पार्श्व ध्वनि के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयत्न किया है।

आभार

इस लघु शोध-प्रबंध के पूरा होने में कई लोगों का विशेष योगदान रहा है। मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. सतीश पावड़े के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे विषय चयन से लेकर लघु शोध-प्रबंध पूर्ण होने तक अपने ढंग से कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी। उनके कुशल निर्देशन एवं लोकतांत्रिक व्यवहार से मुझे निर्द्वंद्व दृष्टि एवं शोध-कार्य पूर्ण करने में काफी मदद मिली है। मैं प्रदर्शनकारी कला (फ़िल्म और नाटक) विभाग के अध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मेरे लघु शोध-प्रबंध में आने वाली समस्याओं को सुलझाते हुए विषय-चयन एवं उचित मार्गदर्शन सहयोग किया।

फ़िल्म निर्माता बोनी कपूर एवं वरिष्ठ फ़िल्म समीक्षक व पत्रकार जय प्रकाश चौकसे के प्रति बहुत-बहुत आभार... जिन्होंने मेरे एक ही अनुरोध पर बड़ी सहजता के साथ अपना मूल्यवान समय देकर मेरे इस लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण होने में सहयोग प्रदान किया।

मैं आशुतोष चंदन, प्रदीप त्रिपाठी, यदुवंश प्रणय, रोहित कुमार तथा पठान ज़फ़र ख़ान के प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस कार्य में आ रही तमाम समस्याओं का निदान कर मेरा सहयोग किया।

अपने पिता डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता तथा माता श्रीमती आशा देवी एवं परिवार के अन्य सदस्यों का ऋणी हूँ जिनके मार्गदर्शन और सहयोग से मूझे उच्च शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला है। अंत में अपने अग्रज एवं मित्रों का भी आभारी हूँ जिन्होंने अपने बहुमूल्य समय के साथ-साथ इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त अन्य कई और नाम भी जाने-अनजाने में छूट जा रहे हैं, उनके प्रति भी बहुत आभार...